

संगुप्त पुं. (तत्.) 1. गुप्त 2. चुपचाप। clandestine

संगुप्ति स्त्री. (तत्.) 1. छिपाव 2. दुराव 3. सुरक्षा।

संगृहीत वि. (तत्.) 1. संग्रह किया हुआ 2. जमा किया हुआ 3. संकलित 4. प्राप्त 5. स्वीकृत 6. एकत्र किया हुआ 7. लब्ध 8. संक्षिप्त किया हुआ।

संगोपन पुं. (तत्.) 1. अच्छी तरह से छिपाकर रखना 2. गोपन 3. छिपाव 4. रक्षा।

संगोलित पुं. (तत्.) भू. 1. गोलाकार रूप से एकत्रित होना 2. संपीडित 3. दबाकर गोलाकार रूप देना। conglpbale

संग्रह पुं. (तत्.) 1. एकत्र करने की क्रिया या भाव, इकट्ठा या जमा करना 2. इकट्ठी की हुई चीजों का ढेर या समूह 3. जमघट 4. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों 5. तालिका, सूची 6. शिव का एक नाम।

संग्रहक वि. (तत्.) संग्राहक, जो संग्रह करता हो, एकत्र या जमा करने वाला।

संग्रहण पुं. (तत्.) 1. ग्रहण, पकड़ 2. गहरों में नग आदि जड़ना 3. प्राप्ति।

संग्रहणी स्त्री. (तत्.) एक रोग जिसमें खायी हुई वस्तुएँ बिना पचे मल के रूप में बाहर निकल जाती हैं, दस्त।

संग्रहणीय वि. (तत्.) 1. संग्रह किए जाने योग्य 2. ग्रहण करने योग्य 3. (औषधि) जिसका सेवन लाभप्रद और आवश्यक हो।

संग्रहना क्रि. (तत्.) 1. संग्रह करना 2. ग्रहण करना।

संग्रहालय पुं. (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की या अनेक प्रकार की वस्तुओं का संग्रह हो, संग्रह स्थान 2. अतीत काल की महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, कलात्मक या रोचक वस्तुओं के परीक्षण, अध्ययन तथा प्रदर्शन के लिए सुरक्षित भवन या संस्थान। museum

संग्रहालयाध्यक्ष पुं. (तत्.) संग्रहालय की देखरेख करने वाला सर्वोच्च अधिकारी।

संग्रही वि. (तत्.) 1. संग्रह करने वाला, एकत्र करने वाला 2. सांसारिक वैभव की कामना रखने और धन-दौलत इकट्ठा करने वाला 3. आश्रय में रहने वाला पु. महसूल या लगान आदि उगाहने वाला अधिकारी।

संग्रहीता पुं. (तत्.) 1. वह जो संग्रह करता हो 2. जमा करने वाला 3. एकत्र करने वाला।

संग्राम पुं. (तत्.) 1. युद्ध 2. लड़ाई 3. समर।

संग्राम-तुला स्त्री. (तत्.) युद्ध के रूप में होने वाली अग्नि परीक्षा।

संग्राम-पटह पुं. (तत्.) युद्ध में बजने वाला एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा, युद्ध का डंका, रण-भेरी।

संग्राह पुं. (तत्.) 1. औजार या हथियार का दस्ता या मूठ पकड़ना 2. मुट्ठी 3. मुक्का।

संग्राहक वि. (तत्.) 1. जो संग्रह करता हो 2. एकत्र करने वाला।

संग्राही वि. (तत्.) संग्रह करने वाला, संग्राहक।

संग्राह्य वि. (तत्.) 1. संग्रह करने योग्य 2. जमा करने लायक।

संघ पुं. (तत्.) 1. लोगों का समुदाय या समूह 2. कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनी हुई संस्था 3. किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित करने वाले आदर्शवादी व्यक्तियों का संगठन 4. प्राचीन भारत में एक प्रकार का लोकतंत्रीय राज्य जिसकी व्यवस्था जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि करते थे 5. दो या अधिक राज्यों के परस्पर मिलने से बनाया हुआ एक नया राज्य जिसमें आधारभूत राज्यों को आंतरिक विषयों में स्वतंत्रता रहती है 6. गौतम बुद्ध की बनाई हुई वह प्रातिनिधिक संस्था जो बौद्ध धर्म के अनुयायियों और विशेषतः भिक्षुओं आदि के संबंध में आचार व्यवहार आदि के नियम बनाती और व्यवस्था करती थी 7. बौद्ध भिक्षुओं के रहने का मठ 8. आधुनिक राजनीति में, राज्यों, राष्ट्रों आदि के पारस्परिक समझौते से बनने वाला ऐसा संघटन